AKSHIT JAIN

MUDITA JAIN

Model: Web-Milan-Phal

Order No: 120677901

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
13/07/1994	जन्म तिथि	27/07/1998
बुधवार	दिन	सोमवार
घंटे 12:55:00	जन्म समय	14:33:00 घंटे
घटी 18:27:44	जन्म समय(घटी)	22:13:57 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Gzb
28:40:53 उत्तर	अक्षांश	28:40:08 उत्तर
77:13:22 पूर्व	रेखांश	77:27:13 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:07	स्थानिक संस्कार	-00:20:11 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:31:54	सूर्योदय	05:38:31
19:21:23	सूर्यास्त	19:14:24
23:47:05	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:07

तुला	लग्न	वृश्चिक
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
सिंह	राशि	सिंह
सूर्य	राशि-स्वामी	सूर्य
पू०फाल्गुनी	नक्षत्र	पू०फाल्गुनी
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
3	चरण	4
वरियान	योग	परिघ
बालव	करण	विष्टि
टी-टीकम	जन्म नामाक्षर	टू-टुनटुन
कर्क	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
वनचर	वश्य	वनचर
मूषक	योनि	मूषक
मनुष्य	गण	मनुष्य
मध्य	नाड़ी	मध्य
श्वान	वर्ग	श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 7वर्ष 11मा 23दि		02:00:20	तुला	लग्न	वृश्चि	05:01:16	शुक्र 2वर्ष 6मा 11दि	
राहु		26:54:09	मिथु	सूर्य	कर्क	10:18:38	राहु	
05/07/2025		21:20:48	सिंह	चंद्र	सिंह	24:58:44	07/02/2024	
06/07/2043		12:49:31	वृष	मंगल	मिथु	20:12:58	06/02/2042	
राहु	18/03/2028	07:26:01	मिथु	बुध	सिंह	03:51:26	राहु	20/10/2026
गुरु	11/08/2030	11:10:13	तुला	गुरु व	मीन	04:04:57	गुरु	14/03/2029
शनि	17/06/2033	08:31:06	सिंह	शुक्र	मिथु	15:30:08	शनि	19/01/2032
बुध	05/01/2036	18:17:14	कुंभ व	शनि	मेष	09:28:02	बुध	08/08/2034
केतु	22/01/2037	28:08:04	तुला व	राहु	सिंह	07:47:11	केतु	26/08/2035
शुक्र	23/01/2040	28:08:04	मेष व	केतु	कुंभ	07:47:11	शुक्र	26/08/2038
सूर्य	17/12/2040	00:43:59	मक व	हर्ष व	मक	17:12:25	सूर्य	21/07/2039
चन्द्र	17/06/2042	28:12:54	धनु व	नेप व	मक	06:50:29	चन्द्र	19/01/2041
मंगल	06/07/2043	01:38:31	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	11:34:03	मंगल	06/02/2042

23:47:05 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:07

लग्न-चलित

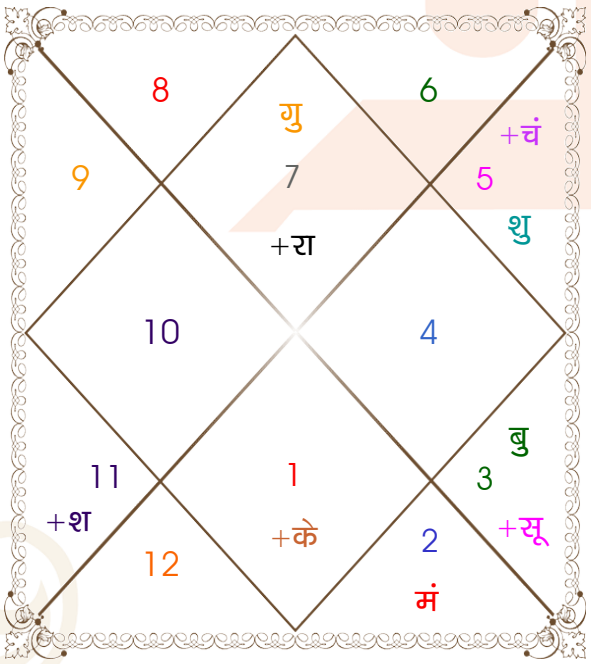

लग्न-चलित

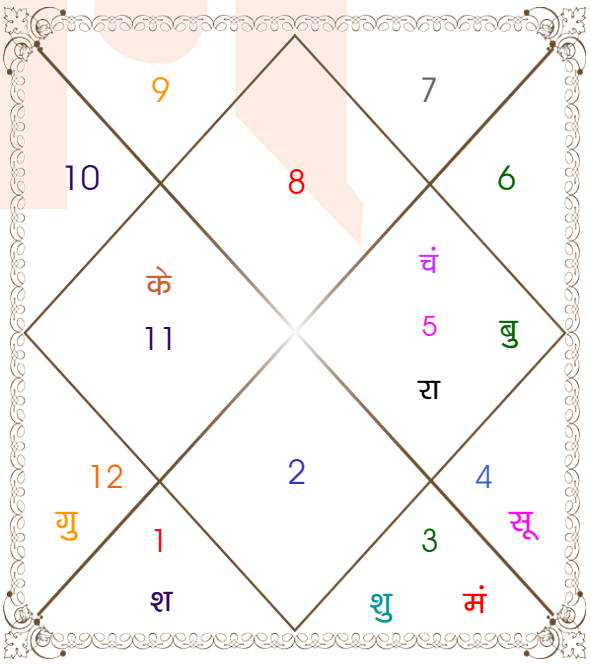

चन्द्र कुंडली

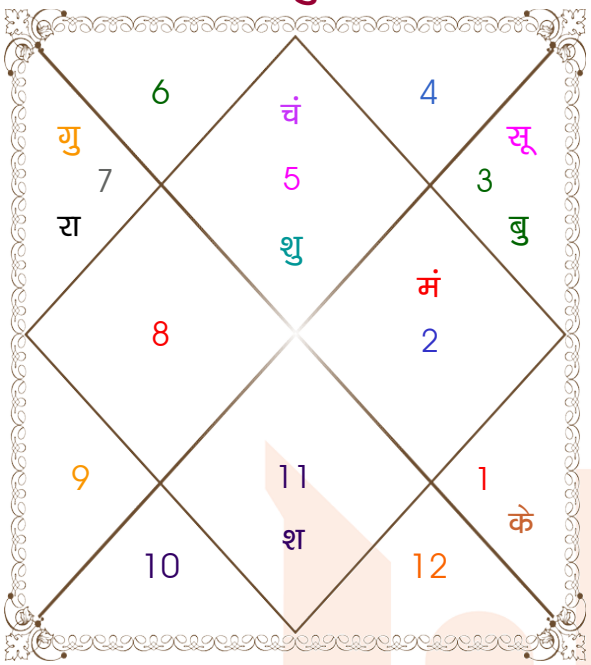

चन्द्र कुंडली

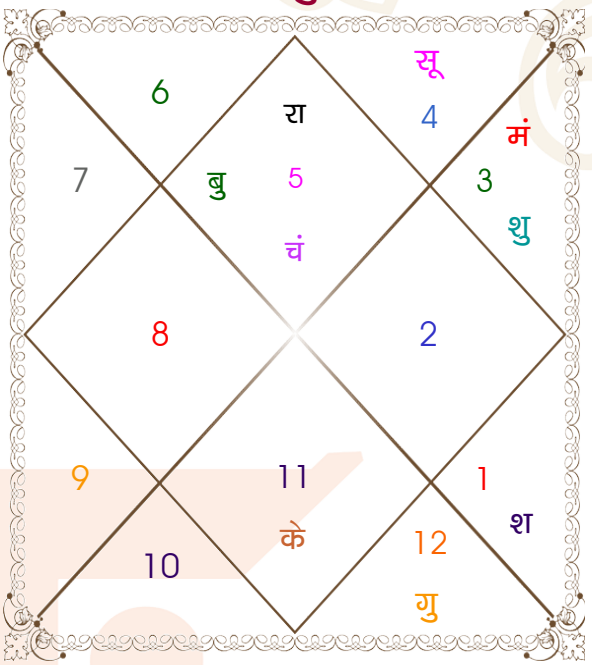

नवमांश कुंडली

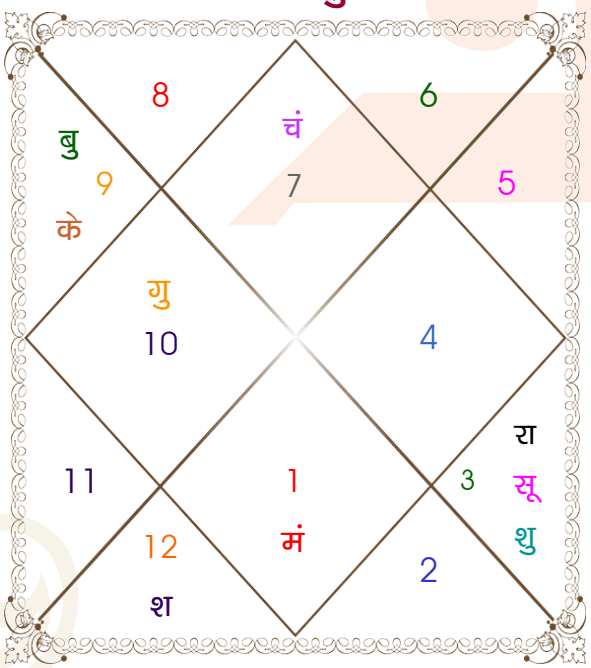

नवमांश कुंडली

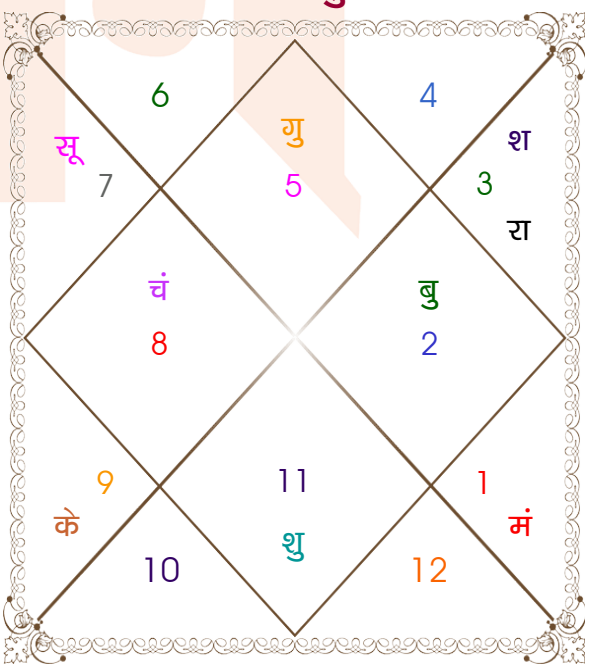

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 7 वर्ष 9 मास 24 दिन

के.पी. अयनांश : 23:40:37

फॉरच्युना : वृश्चिक 26:33:26

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	27:00:37	बुध	गुरु	शुक्र	सूर्य
चंद्र		सिंह	21:27:16	सूर्य	शुक्र	गुरु	चंद्र
मंगल		वृष	12:55:59	शुक्र	चंद्र	राहु	बुध
बुध		मिथु	07:32:29	बुध	राहु	राहु	शनि
गुरु		तुला	11:16:41	शुक्र	राहु	शनि	शुक्र
शुक्र		सिंह	08:37:34	सूर्य	केतु	गुरु	शुक्र
शनि	व	कुंभ	18:23:42	शनि	राहु	चंद्र	राहु
राहु	व	तुला	28:14:31	शुक्र	गुरु	शुक्र	शनि
केतु	व	मेष	28:14:31	मंगल	सूर्य	चंद्र	शुक्र
हर्ष	व	मक	00:50:27	शनि	सूर्य	राहु	सूर्य
नेप	व	धनु	28:19:22	गुरु	सूर्य	चंद्र	शुक्र
प्लूटो	व	वृश्चि	01:44:59	मंगल	गुरु	राहु	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	02:06:48	शुक्र	मंगल	केतु	चंद्र
2	वृश्चि	00:54:22	मंगल	गुरु	मंगल	शनि
3	धनु	01:36:53	गुरु	केतु	शुक्र	राहु
4	मक	03:41:06	शनि	सूर्य	शनि	केतु
5	कुंभ	05:47:46	शनि	मंगल	चंद्र	राहु
6	मीन	05:46:55	गुरु	शनि	बुध	केतु
7	मेष	02:06:48	मंगल	केतु	शुक्र	गुरु
8	वृष	00:54:22	शुक्र	सूर्य	राहु	सूर्य
9	मिथु	01:36:53	बुध	मंगल	बुध	शनि
10	कर्क	03:41:06	चंद्र	शनि	शनि	बुध
11	सिंह	05:47:46	सूर्य	केतु	राहु	राहु
12	कन्या	05:46:55	बुध	सूर्य	बुध	शुक्र

भाव कुंडली

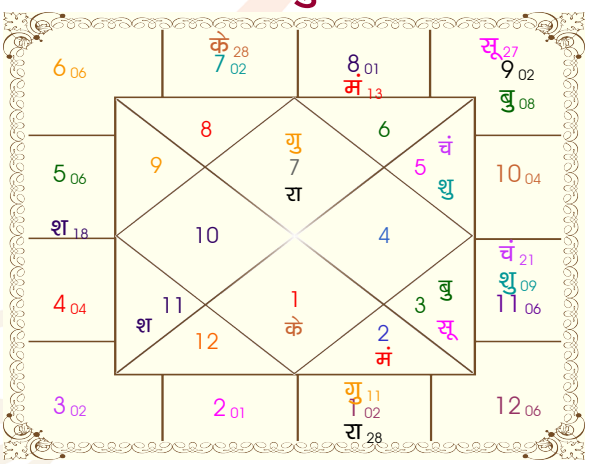

भोग्य दशा काल : शुक्र 2 वर्ष 4 मास 16 दिन

के.पी. अयनांश : 23:43:59

फॉरच्युना : धनु 19:47:30

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कर्क	10:24:46	चंद्र	शनि	सूर्य	चंद्र
चंद्र		सिंह	25:04:52	सूर्य	शुक्र	बुध	राहु
मंगल		मिथु	20:19:06	बुध	गुरु	गुरु	शनि
बुध		सिंह	03:57:34	सूर्य	केतु	चंद्र	राहु
गुरु	व	मीन	04:11:05	गुरु	शनि	शनि	शुक्र
शुक्र		मिथु	15:36:16	बुध	राहु	शुक्र	सूर्य
शनि		मेष	09:34:10	मंगल	केतु	शनि	शनि
राहु		सिंह	07:53:19	सूर्य	केतु	गुरु	शनि
केतु		कुंभ	07:53:19	शनि	राहु	राहु	केतु
हर्ष	व	मक	17:18:33	शनि	चंद्र	शनि	राहु
नेप	व	मक	06:56:37	शनि	सूर्य	बुध	शनि
प्लूटो	व	वृश्चि	11:40:11	मंगल	शनि	चंद्र	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	05:07:24	मंगल	शनि	शनि	राहु
2	धनु	05:15:54	गुरु	केतु	मंगल	बुध
3	मक	08:17:30	शनि	सूर्य	शुक्र	चंद्र
4	कुंभ	12:33:08	शनि	राहु	शनि	गुरु
5	मीन	14:23:28	गुरु	शनि	राहु	शुक्र
6	मेष	11:39:09	मंगल	केतु	बुध	बुध
7	वृष	05:07:24	शुक्र	सूर्य	बुध	बुध
8	मिथु	05:15:54	बुध	मंगल	सूर्य	शनि
9	कर्क	08:17:30	चंद्र	शनि	शुक्र	शुक्र
10	सिंह	12:33:08	सूर्य	केतु	बुध	राहु
11	कन्या	14:23:28	बुध	चंद्र	गुरु	शनि
12	तुला	11:39:09	शुक्र	राहु	शनि	सूर्य

भाव कुंडली

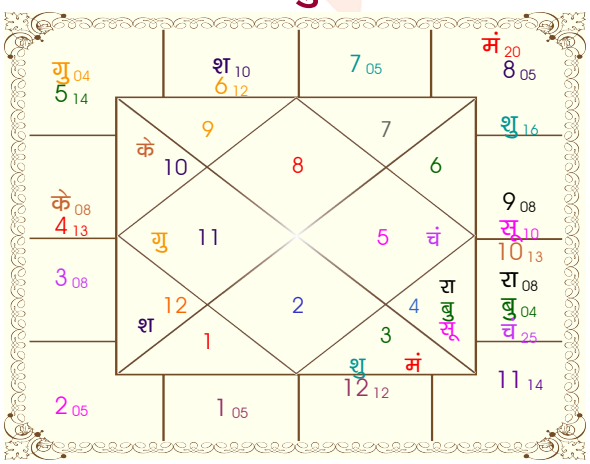

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र- बुध, गुरु+ शुक्र- शनि, राहु+
2	मंगल-
3	सूर्य- गुरु- राहु-
4	शनि-
5	शनि,
6	सूर्य- गुरु- राहु-
7	मंगल- शुक्र, केतु,
8	चंद्र- मंगल, शुक्र-
9	सूर्य, बुध, केतु,
10	चंद्र- मंगल-
11	सूर्य- चंद्र+ मंगल, शुक्र, केतु-
12	बुध-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल-
2	मंगल- गुरु-
3	सूर्य- बुध, गुरु- शनि+ राहु, केतु,
4	सूर्य- मंगल, गुरु+ शनि-
5	सूर्य, मंगल- गुरु+ शनि,
6	मंगल-
7	चंद्र- शुक्र-
8	चंद्र, मंगल, बुध- शुक्र,
9	सूर्य, चंद्र- बुध, शुक्र, राहु, केतु,
10	सूर्य- चंद्र,
11	बुध-
12	चंद्र- शुक्र-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 3- 6- 9, 11-
चंद्र	1- 8- 10- 11+
मंगल	2- 7- 8, 10- 11,
बुध	1, 9, 12-
गुरु	1+ 3- 6-
शुक्र	1- 7, 8- 11,
शनि	1, 4- 5,
राहु	1+ 3- 6-
केतु	7, 9, 11-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 4- 5, 9, 10-
चंद्र	7- 8, 9- 10, 12-
मंगल	1- 2- 4, 5- 6- 8,
बुध	3, 8- 9, 11-
गुरु	2- 3- 4+ 5+
शुक्र	7- 8, 9, 12-
शनि	3+ 4- 5,
राहु	3, 9,
केतु	3, 9,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	सूर्य
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	सूर्य
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	बुध

विंशोत्तरी दशा

शुक्र 7 वर्ष 11 मास 23 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
13/07/1994		06/07/2002		05/07/2008	
06/07/2002		05/07/2008		06/07/2018	
	00/00/0000	सूर्य	23/10/2002	चंद्र	06/05/2009
	00/00/0000	चंद्र	24/04/2003	मंगल	05/12/2009
	00/00/0000	मंगल	30/08/2003	राहु	06/06/2011
	00/00/0000	राहु	23/07/2004	गुरु	05/10/2012
	13/07/1994	गुरु	12/05/2005	शनि	06/05/2014
गुरु	06/05/1995	शनि	24/04/2006	बुध	05/10/2015
शनि	06/07/1998	बुध	28/02/2007	केतु	05/05/2016
बुध	06/05/2001	केतु	06/07/2007	शुक्र	04/01/2018
केतु	06/07/2002	शुक्र	05/07/2008	सूर्य	06/07/2018

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
06/07/2018		05/07/2025		06/07/2043	
05/07/2025		06/07/2043		06/07/2059	
मंगल	02/12/2018	राहु	18/03/2028	गुरु	23/08/2045
राहु	20/12/2019	गुरु	11/08/2030	शनि	05/03/2048
गुरु	25/11/2020	शनि	17/06/2033	बुध	11/06/2050
शनि	04/01/2022	बुध	05/01/2036	केतु	18/05/2051
बुध	01/01/2023	केतु	22/01/2037	शुक्र	16/01/2054
केतु	30/05/2023	शुक्र	23/01/2040	सूर्य	04/11/2054
शुक्र	30/07/2024	सूर्य	17/12/2040	चंद्र	05/03/2056
सूर्य	04/12/2024	चंद्र	17/06/2042	मंगल	09/02/2057
चंद्र	05/07/2025	मंगल	06/07/2043	राहु	06/07/2059

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
06/07/2059		06/07/2078		06/07/2095	
06/07/2078		06/07/2095		07/07/2102	
शनि	09/07/2062	बुध	01/12/2080	केतु	02/12/2095
बुध	18/03/2065	केतु	29/11/2081	शुक्र	31/01/2097
केतु	27/04/2066	शुक्र	28/09/2084	सूर्य	08/06/2097
शुक्र	26/06/2069	सूर्य	05/08/2085	चंद्र	07/01/2098
सूर्य	08/06/2070	चंद्र	04/01/2087	मंगल	05/06/2098
चंद्र	08/01/2072	मंगल	02/01/2088	राहु	24/06/2099
मंगल	15/02/2073	राहु	21/07/2090	गुरु	31/05/2100
राहु	23/12/2075	गुरु	26/10/2092	शनि	10/07/2101
गुरु	06/07/2078	शनि	06/07/2095	बुध	07/07/2102

शुक्र 2 वर्ष 6 मास 11 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
27/07/1998		06/02/2001		06/02/2007	
06/02/2001		06/02/2007		06/02/2017	
	00/00/0000	सूर्य	26/05/2001	चंद्र	08/12/2007
	00/00/0000	चंद्र	25/11/2001	मंगल	08/07/2008
	00/00/0000	मंगल	02/04/2002	राहु	07/01/2010
	00/00/0000	राहु	25/02/2003	गुरु	09/05/2011
	00/00/0000	गुरु	14/12/2003	शनि	07/12/2012
	00/00/0000	शनि	25/11/2004	बुध	08/05/2014
	27/07/1998	बुध	01/10/2005	केतु	07/12/2014
बुध	08/12/1999	केतु	06/02/2006	शुक्र	07/08/2016
केतु	06/02/2001	शुक्र	06/02/2007	सूर्य	06/02/2017

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
06/02/2017		07/02/2024		06/02/2042	
07/02/2024		06/02/2042		06/02/2058	
मंगल	05/07/2017	राहु	20/10/2026	गुरु	26/03/2044
राहु	23/07/2018	गुरु	14/03/2029	शनि	08/10/2046
गुरु	29/06/2019	शनि	19/01/2032	बुध	12/01/2049
शनि	07/08/2020	बुध	08/08/2034	केतु	19/12/2049
बुध	04/08/2021	केतु	26/08/2035	शुक्र	19/08/2052
केतु	01/01/2022	शुक्र	26/08/2038	सूर्य	08/06/2053
शुक्र	03/03/2023	सूर्य	21/07/2039	चंद्र	08/10/2054
सूर्य	08/07/2023	चंद्र	19/01/2041	मंगल	13/09/2055
चंद्र	07/02/2024	मंगल	06/02/2042	राहु	06/02/2058

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
06/02/2058		06/02/2077		06/02/2094	
06/02/2077		06/02/2094		07/02/2101	
शनि	09/02/2061	बुध	05/07/2079	केतु	05/07/2094
बुध	20/10/2063	केतु	02/07/2080	शुक्र	04/09/2095
केतु	28/11/2064	शुक्र	03/05/2083	सूर्य	10/01/2096
शुक्र	28/01/2068	सूर्य	08/03/2084	चंद्र	10/08/2096
सूर्य	09/01/2069	चंद्र	07/08/2085	मंगल	06/01/2097
चंद्र	11/08/2070	मंगल	05/08/2086	राहु	25/01/2098
मंगल	20/09/2071	राहु	21/02/2089	गुरु	01/01/2099
राहु	26/07/2074	गुरु	30/05/2091	शनि	10/02/2100
गुरु	06/02/2077	शनि	06/02/2094	बुध	07/02/2101

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
05/07/2025		18/03/2028		11/08/2030	
18/03/2028		11/08/2030		17/06/2033	
राहु	30/11/2025	गुरु	13/07/2028	शनि	23/01/2031
गुरु	11/04/2026	शनि	28/11/2028	बुध	20/06/2031
शनि	14/09/2026	बुध	02/04/2029	केतु	19/08/2031
बुध	01/02/2027	केतु	23/05/2029	शुक्र	09/02/2032
केतु	30/03/2027	शुक्र	16/10/2029	सूर्य	01/04/2032
शुक्र	11/09/2027	सूर्य	29/11/2029	चंद्र	27/06/2032
सूर्य	30/10/2027	चंद्र	10/02/2030	मंगल	26/08/2032
चंद्र	20/01/2028	मंगल	02/04/2030	राहु	29/01/2033
मंगल	18/03/2028	राहु	11/08/2030	गुरु	17/06/2033

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
07/02/2024		20/10/2026		14/03/2029	
20/10/2026		14/03/2029		19/01/2032	
राहु	03/07/2024	गुरु	14/02/2027	शनि	26/08/2029
गुरु	12/11/2024	शनि	02/07/2027	बुध	21/01/2030
शनि	17/04/2025	बुध	04/11/2027	केतु	22/03/2030
बुध	04/09/2025	केतु	25/12/2027	शुक्र	12/09/2030
केतु	31/10/2025	शुक्र	19/05/2028	सूर्य	03/11/2030
शुक्र	14/04/2026	सूर्य	02/07/2028	चंद्र	29/01/2031
सूर्य	02/06/2026	चंद्र	13/09/2028	मंगल	30/03/2031
चंद्र	23/08/2026	मंगल	03/11/2028	राहु	02/09/2031
मंगल	20/10/2026	राहु	14/03/2029	गुरु	19/01/2032

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
17/06/2033		05/01/2036		22/01/2037	
05/01/2036		22/01/2037		23/01/2040	
बुध	27/10/2033	केतु	27/01/2036	शुक्र	24/07/2037
केतु	20/12/2033	शुक्र	31/03/2036	सूर्य	17/09/2037
शुक्र	25/05/2034	सूर्य	19/04/2036	चंद्र	17/12/2037
सूर्य	10/07/2034	चंद्र	21/05/2036	मंगल	19/02/2038
चंद्र	26/09/2034	मंगल	12/06/2036	राहु	02/08/2038
मंगल	19/11/2034	राहु	09/08/2036	गुरु	26/12/2038
राहु	08/04/2035	गुरु	29/09/2036	शनि	18/06/2039
गुरु	10/08/2035	शनि	29/11/2036	बुध	20/11/2039
शनि	05/01/2036	बुध	22/01/2037	केतु	23/01/2040

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
19/01/2032		08/08/2034		26/08/2035	
08/08/2034		26/08/2035		26/08/2038	
बुध	30/05/2032	केतु	30/08/2034	शुक्र	25/02/2036
केतु	24/07/2032	शुक्र	02/11/2034	सूर्य	20/04/2036
शुक्र	26/12/2032	सूर्य	21/11/2034	चंद्र	20/07/2036
सूर्य	10/02/2033	चंद्र	23/12/2034	मंगल	22/09/2036
चंद्र	29/04/2033	मंगल	14/01/2035	राहु	05/03/2037
मंगल	22/06/2033	राहु	13/03/2035	गुरु	29/07/2037
राहु	09/11/2033	गुरु	03/05/2035	शनि	19/01/2038
गुरु	13/03/2034	शनि	03/07/2035	बुध	23/06/2038
शनि	08/08/2034	बुध	26/08/2035	केतु	26/08/2038

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
23/01/2040		17/12/2040		17/06/2042	
17/12/2040		17/06/2042		06/07/2043	
सूर्य	08/02/2040	चंद्र	31/01/2041	मंगल	10/07/2042
चंद्र	07/03/2040	मंगल	04/03/2041	राहु	05/09/2042
मंगल	26/03/2040	राहु	25/05/2041	गुरु	26/10/2042
राहु	14/05/2040	गुरु	06/08/2041	शनि	26/12/2042
गुरु	27/06/2040	शनि	01/11/2041	बुध	19/02/2043
शनि	18/08/2040	बुध	18/01/2042	केतु	13/03/2043
बुध	04/10/2040	केतु	19/02/2042	शुक्र	16/05/2043
केतु	23/10/2040	शुक्र	21/05/2042	सूर्य	04/06/2043
शुक्र	17/12/2040	सूर्य	17/06/2042	चंद्र	06/07/2043

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
26/08/2038		21/07/2039		19/01/2041	
21/07/2039		19/01/2041		06/02/2042	
सूर्य	11/09/2038	चंद्र	04/09/2039	मंगल	10/02/2041
चंद्र	09/10/2038	मंगल	06/10/2039	राहु	08/04/2041
मंगल	28/10/2038	राहु	27/12/2039	गुरु	30/05/2041
राहु	16/12/2038	गुरु	09/03/2040	शनि	29/07/2041
गुरु	29/01/2039	शनि	04/06/2040	बुध	22/09/2041
शनि	22/03/2039	बुध	21/08/2040	केतु	14/10/2041
बुध	08/05/2039	केतु	22/09/2040	शुक्र	17/12/2041
केतु	27/05/2039	शुक्र	22/12/2040	सूर्य	05/01/2042
शुक्र	21/07/2039	सूर्य	19/01/2041	चंद्र	06/02/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
06/07/2043		23/08/2045		05/03/2048	
23/08/2045		05/03/2048		11/06/2050	
गुरु	18/10/2043	शनि	17/01/2046	बुध	01/07/2048
शनि	18/02/2044	बुध	28/05/2046	केतु	18/08/2048
बुध	08/06/2044	केतु	21/07/2046	शुक्र	03/01/2049
केतु	23/07/2044	शुक्र	22/12/2046	सूर्य	13/02/2049
शुक्र	30/11/2044	सूर्य	06/02/2047	चंद्र	23/04/2049
सूर्य	08/01/2045	चंद्र	24/04/2047	मंगल	11/06/2049
चंद्र	14/03/2045	मंगल	17/06/2047	राहु	13/10/2049
मंगल	28/04/2045	राहु	03/11/2047	गुरु	31/01/2050
राहु	23/08/2045	गुरु	05/03/2048	शनि	11/06/2050

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
06/02/2042		26/03/2044		08/10/2046	
26/03/2044		08/10/2046		12/01/2049	
गुरु	21/05/2042	शनि	20/08/2044	बुध	02/02/2047
शनि	21/09/2042	बुध	29/12/2044	केतु	22/03/2047
बुध	10/01/2043	केतु	21/02/2045	शुक्र	07/08/2047
केतु	24/02/2043	शुक्र	25/07/2045	सूर्य	17/09/2047
शुक्र	04/07/2043	सूर्य	09/09/2045	चंद्र	25/11/2047
सूर्य	12/08/2043	चंद्र	25/11/2045	मंगल	13/01/2048
चंद्र	16/10/2043	मंगल	18/01/2046	राहु	16/05/2048
मंगल	30/11/2043	राहु	06/06/2046	गुरु	03/09/2048
राहु	26/03/2044	गुरु	08/10/2046	शनि	12/01/2049

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
11/06/2050		18/05/2051		16/01/2054	
18/05/2051		16/01/2054		04/11/2054	
केतु	01/07/2050	शुक्र	28/10/2051	सूर्य	31/01/2054
शुक्र	27/08/2050	सूर्य	15/12/2051	चंद्र	24/02/2054
सूर्य	13/09/2050	चंद्र	05/03/2052	मंगल	13/03/2054
चंद्र	12/10/2050	मंगल	01/05/2052	राहु	26/04/2054
मंगल	31/10/2050	राहु	24/09/2052	गुरु	04/06/2054
राहु	22/12/2050	गुरु	01/02/2053	शनि	20/07/2054
गुरु	05/02/2051	शनि	05/07/2053	बुध	31/08/2054
शनि	31/03/2051	बुध	20/11/2053	केतु	17/09/2054
बुध	18/05/2051	केतु	16/01/2054	शुक्र	04/11/2054

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
12/01/2049		19/12/2049		19/08/2052	
19/12/2049		19/08/2052		08/06/2053	
केतु	01/02/2049	शुक्र	31/05/2050	सूर्य	03/09/2052
शुक्र	30/03/2049	सूर्य	18/07/2050	चंद्र	27/09/2052
सूर्य	16/04/2049	चंद्र	08/10/2050	मंगल	14/10/2052
चंद्र	15/05/2049	मंगल	03/12/2050	राहु	27/11/2052
मंगल	03/06/2049	राहु	28/04/2051	गुरु	05/01/2053
राहु	25/07/2049	गुरु	05/09/2051	शनि	20/02/2053
गुरु	08/09/2049	शनि	07/02/2052	बुध	03/04/2053
शनि	01/11/2049	बुध	24/06/2052	केतु	20/04/2053
बुध	19/12/2049	केतु	19/08/2052	शुक्र	08/06/2053

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
04/11/2054		05/03/2056		09/02/2057	
05/03/2056		09/02/2057		06/07/2059	
चंद्र	15/12/2054	मंगल	25/03/2056	राहु	21/06/2057
मंगल	12/01/2055	राहु	15/05/2056	गुरु	16/10/2057
राहु	27/03/2055	गुरु	30/06/2056	शनि	04/03/2058
गुरु	30/05/2055	शनि	23/08/2056	बुध	06/07/2058
शनि	16/08/2055	बुध	10/10/2056	केतु	26/08/2058
बुध	24/10/2055	केतु	30/10/2056	शुक्र	19/01/2059
केतु	21/11/2055	शुक्र	26/12/2056	सूर्य	04/03/2059
शुक्र	10/02/2056	सूर्य	12/01/2057	चंद्र	16/05/2059
सूर्य	05/03/2056	चंद्र	09/02/2057	मंगल	06/07/2059

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
08/06/2053		08/10/2054		13/09/2055	
08/10/2054		13/09/2055		06/02/2058	
चंद्र	18/07/2053	मंगल	27/10/2054	राहु	23/01/2056
मंगल	16/08/2053	राहु	18/12/2054	गुरु	19/05/2056
राहु	28/10/2053	गुरु	01/02/2055	शनि	05/10/2056
गुरु	01/01/2054	शनि	27/03/2055	बुध	06/02/2057
शनि	19/03/2054	बुध	14/05/2055	केतु	29/03/2057
बुध	27/05/2054	केतु	03/06/2055	शुक्र	22/08/2057
केतु	24/06/2054	शुक्र	30/07/2055	सूर्य	05/10/2057
शुक्र	13/09/2054	सूर्य	16/08/2055	चंद्र	17/12/2057
सूर्य	08/10/2054	चंद्र	13/09/2055	मंगल	06/02/2058

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

4	मूलांक	9
7	भाग्यांक	7
1, 4, 6, 7	मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 7
3, 8	शत्रु अंक	4, 5, 8
22,31,40,49,58	शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शनि, बुध, शुक्र	शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शनि, बुध, शुक्र	शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
वृश्चिक, मेष	मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मकर, मिथुन, सिंह	मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
सूर्य	अनुकूल देवता	सूर्य
हीरा	शुभ रत्न	मूंगा
जरकिन, ओपल	शुभ उपरत्न	संगमूंगी
पन्ना	भाग्य रत्न	मोती
रजत	शुभ धातु	ताम्र
रजत	शुभ रंग	रक्त
दक्षिणपूर्व	शुभ दिशा	दक्षिण
सूर्योदय	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन	दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
चावल	दान अन्न	मल्का
दूध	दान द्रव्य	घी

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - AKSHIT JAIN

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - MUDITA JAIN

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	---

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

AKSHIT JAIN

जीवन रत्नः	हीरा	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पन्ना	भाग्योदय, कम खर्च
कारक रत्नः	नीलम	सन्तति सुख, सुख

MUDITA JAIN

जीवन रत्नः	मूंगा	दुर्घटना से बचाव, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मोती	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
कारक रत्नः	माणिक्य	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
शुभ उपरत्नः	पुखराज	सन्तति सुख, धन

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/08/1995-16/04/1998
साढेसाती प्रथम ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती तृतीय ढैया	09/09/2009-15/11/2011
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढेसाती प्रथम ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती तृतीय ढैया	29/06/2039-06/03/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढेसाती प्रथम ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती तृतीय ढैया	21/08/2068-25/10/2070
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/04/2073-04/08/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु व रोग
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	अल्प बचत
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	कम खर्च
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती तृतीय ढैया	09/09/2009-15/11/2011
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती तृतीय ढैया	29/06/2039-06/03/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046
अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती तृतीय ढैया	21/08/2068-25/10/2070
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/04/2073-04/08/2076
अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/03/2084-11/05/2086

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	बदनामी
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

AKSHIT JAIN

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का ह्रास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

MUDITA JAIN

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	वनचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मूषक	मूषक	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

AKSHIT JAIN का वर्ग श्वान है तथा MUDITA JAIN का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

AKSHIT JAIN मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

MUDITA JAIN मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि MUDITA JAIN कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

AKSHIT JAIN तथा MUDITA JAIN में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

AKSHIT JAIN का वर्ण क्षत्रिय तथा MUDITA JAIN का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों ही दम्पत्ति अति ऊर्जावान, साहसी, उद्यमी होंगे साथ ही दोनों एक-दूसरे के साथ सद्भाव एवं प्रेम से जीवन बितायेंगे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर एक-दूसरे की सहायता से सुखी एवं समृद्ध परिवार का निर्माण करने में योगदान देते रहेंगे।

वश्य

AKSHIT JAIN का वश्य वनचर है एवं MUDITA JAIN का वश्य भी वनचर है। दोनों का वश्य समान ही है। जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। AKSHIT JAIN एवं MUDITA JAIN दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/ नापसंद एवं व्यवहार एक जैसे होंगे तथा एक-दूसरे के लिए इनमें अगाध प्रेम रहेगा। क्योंकि दोनों स्वभाव से आक्रामक होंगे इसलिये कभी-कभी इनमें परस्पर लड़ाई-झगड़े भी होता रहेगा। AKSHIT JAIN एवं MUDITA JAIN की संतान आज्ञाकारी, कर्त्तव्य परायण, बुद्धिमान एवं समाज में नाम एवं यश कमाने वाली होगी। दोनों साथी कर्त्तव्यनिष्ठ एवं जिम्मेदार प्रवृत्ति के होंगे। परिवार के सदस्यों की देख-भाल दोनों मिलकर, सहयोग के साथ करते रहेंगे।

तारा

AKSHIT JAIN की तारा जन्म तथा MUDITA JAIN की तारा भी जन्म है। अतः समान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, सहयोग आपसी विश्वास तथा समझदारी की भावना बनी रहेगी। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वास पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण सक्षमता से मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी संतान बुद्धिमान, कर्त्तव्यपरायण तथा सफल होगी।

योनि

AKSHIT JAIN की योनि मूषक है तथा MUDITA JAIN की योनि भी मूषक है। अर्थात दोनों की योनि समान ही है। दोनों योनि के बीच परस्पर मित्रता का संबंध है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के बीच अगाध प्रेम होगा। दोनों हमेशा एक दूसरे को समय-समय पर अपना सहयोग देते रहेंगे जिससे इनका पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन अत्यंत सौहार्द्र एवं प्रेमपूर्वक बीतेगा। सोच एवं समझदारी में समानता होने के कारण परस्पर वैचारिक मतभेद नहीं रहेंगे। इस प्रकार आपसी विश्वास रहने के कारण आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। आप दोनों पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन में शांति का अनुभव करेंगे। मन में हर्षोल्लास की भावना बनी रहेगी। साथ ही परिवार में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। धन का आगमन समय-समय पर होता रहेगा। जिसके कारण आप सुखी पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन व्यतीत करेंगे। दोनों आपसी समझबूझ के साथ जीवन में आने वाली किसी भी समस्या

का समधान शीघ्र ही निकाल पाने में सझम होंगे। जिसके कारण इनका पारिवारिक जीवन अत्याधिक समृद्धिशाली रहेगा। इस प्रकार इनका वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन सुखी होगा एवं प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में AKSHIT JAIN एवं MUDITA JAIN दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि AKSHIT JAIN एवं MUDITA JAIN दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

AKSHIT JAIN का गण मनुष्य तथा MUDITA JAIN का गण भी मनुष्य ही है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के स्वभाव एक जैसे होंगे। दोनों भौतिक सुखों के आकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान, व्यावहारिक तथा मिलनसार रहेंगे। तथा साथ मिलकर अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

भकूट

AKSHIT JAIN एवं MUDITA JAIN दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान AKSHIT JAIN एवं MUDITA JAIN तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

AKSHIT JAIN की नाड़ी मध्य है तथा MUDITA JAIN की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान हैं, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। यदि पति-पत्नी की समान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में से किसी की मृत्यु की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में AKSHIT JAIN एवं MUDITA JAIN का विवाह अति घातक हो सकता है। आपकी संतान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप से असंतुलित, मानसिक बीमारी से ग्रस्त हो सकती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त सिंह राशि है। इसके प्रभाव से दोनों में स्वभावगत समानताएं रहेंगी तथा एक दूसरे को समझने में पूर्णतया सफल होंगे। अतः इनका दाम्पत्य जीवन अच्छा रहेगा। इस प्रकार सुखी वैवाहिक जीवन की दृष्टि से मिलान उत्तम रहेगा।

AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN दोनों की राशि का स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से इनके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। तथा एक दूसरे के प्रति स्नेह सहानुभूति एवं समर्पण का भाव रहेगा। ये परस्पर गुणों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करेंगे एवं एक सच्चे मित्र की तरह कमियों की उपेक्षा करेंगे। इस प्रकार उत्तम सामंजस्य के कारण AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN का दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा। साथ ही सम्मान एवं अस्तित्व के आधार पर एक दूसरे को पूर्ण सुख तथा सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।

AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN की जन्म राशियां परस्पर प्रथम प्रभाव भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट कहलाता है। इसके प्रभाव से इनका एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण रहेगा तथा AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN दोनों अपने क्षेत्र में योग्य तथा प्रसिद्ध रहेंगे। साथ ही स्वाभाविक प्रवृतियों में भी समानता का भाव रहेगा जिससे विवाद मतभेद्ध या विरोध आदि के अत्यंत कम क्षण आएंगे अन्यथा AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे।

AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN दोनों का वश्य वनचर है । अतः इसके प्रभाव से इनकी अभिरूचियों में अनुकूलता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं भी समान होंगी फलतः दाम्पत्य संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN दोनों का वर्ण क्षत्रिय है। अतः स्वभाव से दोनों पराक्रमी एवं साहसी होंगे तथा साहसिक कार्यो को सम्पन्न करने में प्रवृत रहेंगे। फलतः कार्य क्षेत्र की स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

धन

AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN का जन्म एक ही तारा 'जनम' में हुआ है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट एवं मंगल का प्रभाव भी आर्थिक स्थिति पर सामान्य ही रहेगा। अतः अपने वर्तमान स्रोतों से परिश्रम पूर्वक धनऐश्वर्य की प्राप्ति होती रहेगी जिससे लाभ मार्ग सामान्यतया प्रश्स्त होंगे तथा आर्थिक स्थिति से AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

AKSHIT JAIN को पैतृक सम्पति तथा जायदाद की प्राप्ति होगी। अतः आजीवन वे धन धान्य से युक्त रहेंगे तथा अपनी प्रतिभा, योग्यता एवं परिश्रम से उसमें उतरोत्तर वृद्धि करने में समर्थ होंगे । इस प्रकार भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करते हुए वे अपना समय आनंद पूर्वक व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN दोनों एक ही नाड़ी में उत्पन्न हुए है। अतः प्रथम दृष्टि से यह नाड़ी दोष बनता है लेकिन दोनों एक ही नक्षत्र के विभिन्न चरणों में पैदा हुए है अतः इनका नाड़ी दोष समाप्त हो जाता है। जिससे ये किसी गंभीर रोग से पीड़ित नहीं रहेंगे लेकिन मंगल का AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN दोनों के स्वास्थ्य पर खराब प्रभाव होगा। इससे AKSHIT JAIN को हृदय रोग संबंधी परेशानियां होगी तथा संभोग शक्ति में भी शिथिलता उत्पन्न होगी। साथ ही MUDITA JAIN गुप्त रोगों से किंचित परेशानी की अनुभूति करेंगी। अतः उपरोक्त अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN दोनों को हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में MUDITA JAIN के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन MUDITA JAIN को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में MUDITA JAIN को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार AKSHIT JAIN और MUDITA JAIN का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

MUDITA JAIN के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों

के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत MUDITA JAIN के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

MUDITA JAIN अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार MUDITA JAIN के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

AKSHIT JAIN के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को AKSHIT JAIN अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी AKSHIT JAIN के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण AKSHIT JAIN के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

AKSHIT JAIN

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में उच्चाभिलाषी वर्गानुसार जन्म लग्न तुला के उदय काल हुआ था। तुला नवमांश एवं तुला द्रेष्काण के उदय कालीन प्रभाव वर्गोत्तम दशा में अनेकानेक शुभ संकेतों का सृजन कर रहा है। फलस्वरूप आप आरामदायक, उच्च आनन्द प्रदायक जीवन का प्रसन्नता युक्त सुखपूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

यह सुनिश्चित है कि आप अपनी अभिरूचि के अनुसार अपनी जीवन संगिनी अर्थात् अपनी पत्नी का चयन करेंगे। आप कामुक प्राणी है। इस प्रभाव से आप अपना अधिक समय प्रेम-प्रसंग के चिंतन तथा प्रेम संबंध स्थापित करने में व्यतीत करेंगे। आप उच्च स्तर के भावुक प्राणी है। आप अपनी संगिनी को हार्दिक प्यार करते हो तथा अनुग्रहपूर्वक वासनात्मक प्रवृत्ति से व्यवहार करते हों। आप पूर्ण रूपेण अपनी संगिनी के प्रति समर्पित प्राणी हैं। यदि आपका संगिनी आपकी अभिरूचि के अनुरूप अथवा आशा के अनुकूल आचरण नहीं करती है तो दोनों के समक्ष संबंधित समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। जब आप भी अपनी संगिनी को कुछ उपहार नहीं देते हो लेकिन सामंजस्य स्थापित करने के प्रति कार्यरत हो जाते हैं। आप अपने स्वाभावानुकूल उस व्यक्ति के साथ तारतम्य स्थापित कर सकेंगे, जिनकी राशि मिथुन हो अथवा कुंभ राशि में जन्म हुआ हो। आप यह निश्चित मान कर चले कि आपका मेल मीन मकर एवं कर्क राशि अर्थात् जलीय गुणयुक्त प्राणी से असंभव है।

आपका रंग रूप उत्तम एवं पूर्ण विकसित शरीर होगा। आप पूर्ण युवा शक्ति संपन्न होंगे। परिणामस्वरूप आपके मित्र संबंधित एवं व्यवसायिक मित्रों के मध्य प्रख्यात होंगे। आप पूर्णरूपेण आश्वस्त हैं कि आप अपने व्यक्तित्व का प्रयोग कर अपनी अच्छी पहचान जन सामान्य की दृष्टि में बनाकर, लाभ प्राप्ति के क्षेत्र में उच्च स्तर प्राप्त करेंगे।

फलस्वरूप आप थोक धन की आय करेंगे तथा बहुतायत में खर्च भी करेंगे। आप यदा कदा बेतुकी बात करके आनन्द प्राप्त करेंगे। आपमें विभिन्न आकर्षक विद्यमान है। आप मुक्त हस्त से धन का व्यय करते हैं। आप सदैव सहृदयता पूर्वक धन का कुछ अंश व्यय करने के लिए उद्यत रहते हैं। आप किसी भी प्रकार की करूण कथा सुन कर यदा कदा किसी को भी मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग करते हैं।

कुछ व्यक्ति आपकी इस प्रकार की उदारतापूर्ण व्यवहार एवं भाव वृद्धि को अनुपयुक्त समझकर आपको अज्ञानी समझते हैं। अतः आप इस प्रकार की उदारतापूर्ण प्रवृत्ति के प्रति अपने विचारों को मेड़ने की शिक्षा ग्रहण करें।

सभी मिला जुलाकर आप बहुत अच्छे एवं सौम्य व्यक्ति हैं। परन्तु यदा-कदा किसी भी सुअवसर पर आप अपने धैर्य की अवनति कर सकते हैं तथा आप प्रतिशोध ले सकते हैं। आपको अपनी इस प्रवृत्ति पर भली प्रकार प्रतिरोध लगाना होगा। अन्यथा आपकी छवि पर कोई कलंक लग सकता है।

आप सौभाग्यवश शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं निरोग रहेंगे। आप अपनी मध्यावस्था तक अपने शारीरिक वृद्धि की प्रवृत्ति के प्रत्ति विमुख रहें। उत्तम तो यह है कि आप अधिक भोजन पर अश्रित न रहें तथा भोजन पर नियंत्रण रखें। संप्रति आप किसी प्रकार के रोग से संक्रमित तथा अधीन हो सकते हैं। आप किडनी के रोग एवं मूत्र संबंधी रोग के प्रति सतर्क रहे। आपके लिए यह निर्देश है कि आप अपने घर पर अपने मित्रों के साथ कोई व्रण क्षत के शिकार हो सकते हैं। आपको इस बात के प्रति अनुभव अर्थात् पश्चात करना चाहिए कि बिना मित्र के सहयोग से आपके लिए दायित्व को पूरा करना सहज बात नहीं है।

आपके लिए सेवा व्यवसायों में उपयुक्त एवं प्रभावी कार्य सामाजिक जीवन का नेतृत्व अति अनुकूल प्रतीत होता है। आप गर्वनमेंट सेवक एवं अधिकारी के साथ लोक माध्यम का कार्य करें तो अच्छा है। यदि आप अनुमोदन करे तो आप स्वयं रासायनिक व्यवसाय तरल पदार्थों का व्यवसाय जैसे तेल-धृत आदि अथवा इसके अतिरिक्त आप विधिवेत्ता (वकील) अर्किटेक्ट विक्रय प्रतिनिधि, लेखक गायन वाद्य यंत्रवादक, पार्श्व गायक के साथ-साथ आप राजनीति से भी स्रोत स्थापित रख सकते हैं।

आपके लिए रंगों में उत्कृष्ट नारंगी एवं लाल रंग शुभकारक एवं भाग्यवर्द्धक है। आप पीला एवं हरे रंगों का त्याग कर दें।

आपके लिए अंको में 8 अंक उत्तम एवं धनोपार्जन अथवा धन निवेश हेतु अनुकूल है। साथ ही अंक 1, 2, 4 और 7 अंक सर्वथा अनुकूल है। परन्तु अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक आपके लिए प्रतिकूल अंक है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

MUDITA JAIN

आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण मे वृश्चिक लग्न के उदय काल में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर वृश्चिक लग्न के साथ-साथ सिंह राशि का नवमांश एवं वृश्चिक राशि का द्रेष्काण भी उदित था। नक्षत्र प्रभावानुसार यह सुनिश्चित संभावना है कि आप वैदेशिक यात्रा पर जाएंगी और वहीं अपना निवास बनाकर सुनिश्चित हो जाएंगी।

आप धनी, समृद्ध एवं तीव्र बुद्धि की स्वस्थ प्राणी होंगी। स्वाभाविक रूप से आप भ्रमण प्रिय होंगी तथा आप नये-नये स्थानों का परिदर्शन अर्थात् परिभ्रमण करने में समर्थ होंगी। आप में अनेकोनेक गुण विद्यमान हैं जो आपके यथेष्ठ धनोपार्जन में सहायक होगा। आप व्यक्तिगत रूप से अत्यंत ही दृढ़ निश्चयी हैं। आप अपने उद्देश्य से लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कठिन श्रम करेंगी। आप अपने खेल के पत्ते को उसके लिए बंद कर देती हैं, जिनके संबंध में आपका हृदय स्वीकार नहीं करता। यदि अन्य व्यक्ति आपको सुनिश्चित कार्य-व्यवसाय हेतु प्रेरित करता है तो आप निश्चित समय पर निश्चित रीति से कार्य संपादन कर लेती हैं। आपकी भावनाओं

अर्थात् बातों को समझ कर ठीक तरीके से कार्यान्वयन कर लेना किसी के लिए भी यह दुरूह कार्य है। आप निःसंदेह अत्यंत मधुर भाव से अपनी भावना के प्रतिकूल आचरण करने लगती हैं ; लेकिन सभी लोग यह जानते हैं कि आप जो मुंह से उच्चारण करते हैं, वह सत्य नहीं है। स्पष्टतः आपकी उपस्थिति आपसे संबंधित बातों के लिए भ्रामक प्रमाणित होता है। आपकी आलस्यपूर्ण रवैया के प्रति आप ध्यान नहीं देती। यह उद्देश्य आपसे संबंधित कार्य संपादन हेतु अनैतिक कार्य है। आप किसी भी अवसर पर कोई भी अपेक्षित कार्यकाल अपनी अति प्रतिशोधात्मक मुद्रा अपना लेते हैं। इसलिए आप से संबंधित आपका कार्य बिना किसी भी बाधा के धीरे-धीरे संपादित हो जाता है।

आपकी ऐसी प्रवृति है कि आप स्वयं अपनी आस्था के अनुसार किसी भी विषय की गंभीरता पूर्वक जांच पड़ताल कर लेती हैं, क्योंकि आप परिपक्व बुद्धि की प्राणी है। आप अपने हित के लिए किसी भी यथार्थ कार्य हेतु संबंधित कठिन निर्णय लेकर अपने कार्य को सुगमतापूर्वक कार्य रूप देती हैं। आप स्वतंत्र निष्पक्ष एवं निर्भीक प्राणी हैं। आप अपने कार्य उद्देश्य को लक्ष्य तक पहुंचाने में अपनी नीति के साथ किसी भी प्रकार की बुराई के प्रति सतर्कता पूर्ण रवैया अपनाकर चाहे जो कुछ भी व्यवधान हो। उसे स्पष्ट कर लेती हैं। आप स्वाभाविक रूप से आर्थिक सहयोग प्रदान कर प्रचूर मात्रा में आपको धनवान बनने का सौभाग्य प्रदान करता है।

आप धन संचय द्वारा समय-समय पर अपनी प्रवृति को मोड़कर उदरतापूर्वक अपने संबंधी एवं मित्रों को बहुतायत में अर्थात् पर्याप्त मात्रा में आर्थिक अनुदान देती हैं जो आपको उनके मध्य प्रसिद्ध बनाता है।

आप अपनी विश्वसनीयता एवं सुयोग्य पति के साथ अपना प्रसन्नतम पारिवारिक जीवन को शान्तिपूर्वक बिताएंगी। आपके लिए आदर्श जीवन संगी हेतु उपयुक्त एवं दर्शनीय व्यक्ति वह है जिसका जनम राशि बृश्चिक, कर्क, मीन, कन्या, मकर अथवा बृष राशि हो। आप अति उत्तम संतान के साथ सौभाग्यशाली जीवन यापन करेंगी।

आपका व्यक्तित्व बहुत उत्तम है। आप औसतन लंबाई से युक्त पूर्ण स्वस्थ रहेंगी। यदि आप किसी भी प्रकार का जोखिमपूर्ण कार्य किया तो कुछ वर्षों के पश्चात् आप प्रजनन दौर्व्यल्यता, इंद्रिय रोग एवं अनिंद्रा रोग से युक्त एवं आक्रांत हो जाएंगी। अतः आप इस प्रकार की संभावित घटनाओं के प्रति सतर्कता पूर्वक कदम उठाएं। यह प्रक्रिया आपके स्वास्थ्य रक्षा हेतु उत्तम एवं सहायक होगी।

साप्ताहिक दिनों में आपका भाग्यशाली दिन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार, है। आपके लिए वास्तव में शुक्रवार, बुधवार एवं शनिवार का दिन अनुकूल नही है।

आप अंको में 1, 2, 3, 4 एवं 9 अंक को अपने हित में सम्मिलित कर सकते हैं, परंतु 5, 6 एवं 8 अंक आपके लिए अव्यवहरणीय है।

रंगों में रंग नीला, सफेद एवं हरा रंग अनुपयुक्त है जबकि रंग लाल, नारंगी, पीला एवं क्रीम रंग आपके हित अनुकूल है।